Chapter 1st (1

प्रथम खण्ड

प्रथम खंड, पृष्ठभूमि

- प्रथम प्रकरण -

विषय प्रवेश

भारत अेक विशाल देश ही नहीं, बल्कि विस्तृत भूखंड भी है. प्रदेश-विस्तार के समान ही जिस देश को अेक सुदीर्घ अितिहास अेवं दीर्घकालीन सांस्कृतिक परंपरा भी प्राप्त है. देश के विस्तार के कारण स्वाभाविकतया भौगोलिक वैपरीत्य, सामाजिक रीति-नीतियों में विविधता अेवं भाषाओं में भिन्नता भी अिसकी विशेषताअें है. अितिहास के आदियुग से वर्तमान युग तक ये विशेषताअें भारत के स्वरूप अेवं भाग्यनिर्णय में कामकर रही है, तो भी अिस देश की महान विशेषता है अिस की अेक सांस्कृतिक परंपरा जिस का अजस्र प्रोत अिस महान देश को अेक सूत्र में बांधकर प्रवाहित है. अिन विविधताओं के बीच की यह सांस्कृतिक अेकता जानकर संसार के विभिन्न देश के लोग चकित रह जाते हैं. अिसी अेकता के स्त्रोत को पहचानना भारत का दर्शन करना है.

हिंदी उत्तर भारत के विशाल भूभाग की जनभाषा है और कन्नड दक्षिण के मैसूर राज्य अथवा कर्नाटक की लोक भाषा है. भाषावैज्ञानिक दृष्टिसे दोनों का मूल परिपूर्ण भिन्न है. हिंदी आर्य भाषा है जब कि कन्नड द्राविड भाषा है. दोनों का भाषास्वरूप, व्याकरण वैशिष्ट्य, लिपि भी भिन्न है. अैसा होते हुअे दोनों के शब्द-समूह में अंशत: ही क्यों न हो, सामीप्य दिखाअी पडता है. अिस का कारण दोनों भाषाओं पर का संस्कृत भाषा का प्रभाव है. दोनों की साहित्यिक परंपराओं में भी अेक घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध है जो संस्कृत के गहरे प्रभाव के कारण है. हजारों वर्षों से आर्यभाषा संस्कृत भारत में संस्कृति की वाहिका अथवा माध्यम बनकर अपूर्व कार्य कर रही है. अत: अिस विचित्र देश में अद्भुत अेकता स्थापित हो चुकी है. भारत की चौदह भाषाओं में कोअी भाषा संस्कृत से अुऋण नहीं रह सकती.

उत्तर की आर्य भाषाओंसे भी दक्षिण की द्राविड भाषाओंका उदय प्रायश: पहले ही हो चुका था. यों तो कर्नाटक में जनभाषा के रूप में कन्नड का व्यवहार पांचवीं शताब्दी के पूर्व से ही चल रहा हो, साहित्य की दृष्टि से प्रथम प्राप्त ग्रंथ है 'कविराज मार्ग' जिस का रचनाकाल नवम शताब्दी है.[1] इसीको कन्नड का प्रथम साहित्य ग्रंथ मान लें, तो अनुमान कर सकते हैं कि कन्नड साहित्य का उदय नौवीं शताब्दी तक हो चुका था. परंतु हिन्दी तथा अन्य आर्यभाषाओं का उदय ग्यारह वीं शताब्दी के पूर्व नहीं होता. पं. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी - साहित्य का आदिकाल या आरंभ सवंत् १०५० (सन् ९९३ ई.) से माना जा सकता है.[2] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कन्नड भाषा का साहित्य हिन्दी भाषा साहित्य से दो शतक प्राचीन है. दोनों भाषा साहित्यों की पूर्व परंपरा का अवलोकन करने से यह विदित होता है कि साहित्यिक गतिविधियों में पर्याप्त समानता के उपकरण प्राप्त हो सकते हैं. इन सब की विवेचना प्रस्तुत प्रबंध की व्याप्ति के बाहर है, तो भी प्रासंगिकतया इतना तो कहा जा सकता है कि इन दोनों भाषा-भाषी-प्रदेशोंमें वीर और भक्ति रस के स्रोत न्यूनाधिक समानरीति से प्रवाहित हुए हैं. और तत्कालीन साहित्योंको समृध्द बनाया है. यह सर्वविदित है कि इस प्रकार सुदूर के दो भाषा-भाषी प्रदेशों के साहित्यों में तत्काल में समान गतिविधियोंका एक कारण ऐतिहासिक है, दूसरा कारण भारतीय सर्व भाषाओं की प्रेरिका संस्कृत ही है. जिस संस्कृतने हिन्दी साहित्य में प्राण भरे हैं, वही कन्नड की श्री वृध्दि में सहायक रही है. यों - संस्कृतसे ही दोनों साहित्योंका विकास हुआ, अत: दोनों साहित्योंकी गतिविधियों में समान अंशों का होना स्वाभाविक है.

---

१) डॉ.आर.एस.मुगळि - कन्नड साहित्य चरित्रे, १९६० ई. का संस्करण, पृष्ठ ५.

२) पं.रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास दशम संस्करण, पृष्ठ ३.

१८ वीं शताब्दी में जब भारतमें अंग्रेजशासन का सूत्रपात हुआ, भारतीय जनता का संपर्क अंग्रेज लोग एवं पश्चिमी राष्ट्र विशेषात: विलायतसे शुरू हुआ. एक तो युरोप से भारत देश में विज्ञान का प्रकाश फैलने लगा, दूसरा इस देश के साहित्यपर युरोप के साहित्यों का भी प्रभाव पडने लगा. साहित्यक्षेत्र में सबसे बडी क्रांति गद्य साहित्य के आविर्भाव के साथ शुरू होती है. हिन्दी और कन्नड दोनों - साहित्यों में इस क्रांति के कार्य में ईसाई मिशनरियों की सेवा अविस्मरणीय है. १९ वीं शताब्दी में गद्य साहित्य का आरंभ हिन्दी और कन्नड दोनों में अनुवाद के कार्यसे शुरू होता है. इस कालमें आधुनिक साहित्य की, विशेषात: गद्य साहित्य की सब प्रमुख विधाओं का आरंभ हुआ. परंतु यह युग मौलिक रचनाओं का नहीं था, अनूदित रचनाओंका था. यह एक संक्रमण काल था प्राचीन एवं नवीन साहित्यविधाओंके लिए, वैसे ही भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य स्वरूप के सम्मिलन की दृष्टिसे भी. दोनों भाषाओंमें संस्कृत के कथा साहित्य एवं श्रेष्ठ नाटक अनूदित हुए, वैसे ही इस शताब्दीके उत्तरार्धमें अंग्रेजीके श्रेष्ठ नाटक एवं कथासाहित्य का अनुवाद हुआ. इस युग के गद्य साहित्य में नाटक एवं कथासाहित्य का प्रमुख स्थान है. यह इस युग की विशेषाता थी कि कथा साहित्य जनप्रिय होते चला. इस युग के अंतिम दो दशकोंमें कथासाहित्य में ही एक नवीन विधा का आरंभ हुआ जो उपन्यास के नामसे जनप्रिय हो गयी.

कथासाहित्य में इस नवीन साहित्य के स्वरूप का जन्म जो हुआ, यह अंग्रेज साहित्य के प्रभाव का फल है. अंग्रेज साहित्य में 'नॉवेल' (Novel) के नामसे यह साहित्य विधा पश्चिममें जनप्रियता प्राप्य कर चुकी थी. भारत में अंग्रेज भाषा के अध्ययन के फलस्वरूप हमारे - तत्कालीन विव्दान लोग इस विशेषा कथास्वरूपसे आकर्षित हुए जिसका परिणाम है हमारी भाषाओं में उपन्यास का आरंभ.

सर्व प्रथम हिन्दी और कन्नड दोनोंमें उपन्यास का प्रादुर्भाव अनूदित कृतियोंसे होता है. भारतीय भाषाओंमें उपन्यास की रचना बंगालमें ही सर्वप्रथम आरंभ हुअी. अंग्रेजी साहित्य का सीधा प्रभाव सर्व प्रथम बंगाली साहित्यपर ही हुआ था, अत: आधुनिक युग के अिस सशक्त एवं जनप्रिय साहित्यस्वरूप की मौलिक रचना भी बंगला भाषा में ही सर्व प्रथम होने लगी. बंकिमचन्द जैसे महान उपन्यासकार बंगालमें हो गये जिन के - सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी और कन्नड दोनों में अनूदित हुए. डा.हजारी प्रसाद व्दिवेदीजीका मंतव्य है, " बंकिम बाबू का प्रभाव हिन्दीपर ही नहीं, तत्कालीन अन्य भारतीय भाषाओंपर भी पडा. हिन्दी में तो अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव शुरू - शुरू में सीधे न आकर बंगाली लेखकों के माध्यमसे ही आया."[1] संयोग की बात है कि जहाँ तक उपन्यास साहित्य का संबंध है, हिन्दी में ही नहीं, कन्नड में भी अंग्रेजी के अिस नवीन साहित्यस्वरूप का आगमन बंगाली लेखकों के माध्यम सेही हुआ है. कन्नडके लेखकों को भी बंकिम बाबू प्रेरणा स्रोत रहगये और बि. वेंकटाचार्य जैसे श्रेष्ठ लेखकने कन्नडमें उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोंका अनुवाद किया. हिन्दी और कन्नड दोनों भाषाओंमें बंकिमचन्द की कृतियाँ अनूदित हो कर आयीं और इतनी जनप्रिय बनीं कि उपन्यास साहित्य की और लोगों की दृष्टि आकर्षित हुअी. मराठी के श्रेष्ठ उपन्यासकार भी आलोच्य दोनों - भाषाओंपर न्यूनाधिक प्रभाव डालते हैं. १९ वीं शताब्दीके अंतिम दो दशकों में हिन्दी तथा कन्नड भाषा - भाषी प्रदेशोंमें उपन्यास जनप्रियता प्राप्त कर चुके थे और साहित्य के क्षेत्रोंमें मौलिक उपन्यासों की रचना की प्रेरणा दे चुके थे. फलत: दोनों भाषाओंमें मौलिक उपन्यासोंका सृजन शुरू हुआ और २० वीं शताब्दीमें उपन्यास अपने गुण तथा संख्या दोनोंमे सबसे प्रभावी साहित्य बना हुआ है.

---

१) 'हिन्दी साहित्य, उसका उदभव और विकास'
डा.हजारी प्रसाद व्दिवेदी. पृष्ठ २७६. संस्करण १९६४.

KARNATAK UNIVERSITY DHARWAR

उपर्युक्त संक्षिप्त अवलोकनसे यह स्पष्ट है कि यद्यपि हिन्दी और कन्नड दोनों भिन्न मूल कीही नहीं, दूर की दो भाषाएँ है, तथापि साहित्य की प्राचीन परंपरा में भी दोनों साहित्यों में समानता न्यूनाधिक अंशमें दृष्टि गोचर होती है. आधुनिक युगमें हिन्दी राष्ट्र भाषा का समुन्नत गौरव प्राप्तकर चुकी है और कन्नड भाषा-भाषी प्रदेश में भी उसका अध्ययन होने लगा है, तत् परिणाम दोनों भाषाओं में पारस्परिक सन्निकटता आ चुकी है. अत: यह स्वाभाविक है, दोनों भाषाओंमें साहित्यिक - आदानप्रदान भी अधिक होने लगा हो. इस प्रबंधमें मेरा प्रतिपाद्य विषाय यह है कि दोनों भाषाओंमें उपन्यास साहित्यकी जो परंपराएँ है, उनका तुलनात्मक दृष्टिसे अध्ययनकर यह उद्घाटितकर के प्रस्तुत करनेका प्रयत्न करूं कि दोनों में समानता के उपादान कौन कौनसे हैं, तथा विषामता कहाँ है. यदि इन उपादानों का कोई प्रमुख कारण हो, तो उसकी विवेचना करना भी अिस प्रबंध का अेक अंश होगा. उपन्यास साहित्य प्रभाव अेवं संख्या की दृष्टिसे आधुनिक युग में अितना व्यापक साहित्यस्वरूप है, प्रत्येक भाषामें अिस साहित्यकी परंपरा का गहरा अध्ययन, अनुशीलन करना हो तो सारी परंपरा का अध्ययन नहीं हो सकता, कअी दशकों का स्तरीयअध्ययनही संभव है. दोनों भाषाओंमें अितने विपुल उपन्यास निकल चुके हैं, और दिनंप्रति निकल रहे है, अिन सब का अध्ययन अैसे अेक प्रबंध में होसके, यह कभी संभवनीय नहीं. प्रस्तुत प्रबंध में विषाय अेवं शैली की दृष्टिसे प्रातिनिधिक प्रमुख परंपरा का ही अध्ययन संभव है. अन्य शोधकर्ताओंके लिअे सामग्री हो सकता है. डा. राधाकृष्णन के कथन में ''चूंकि विभिन्न भाषाओंके लेखक अेक ही समान श्रुतसे प्रेरणा पाते है, और सब का भावनात्मक और बौध्दिक अनुभव भी कम या अधिक मात्रामें प्राय: अेकसाहै.[1]'' दोनों भाषाओंके अिस भावनात्मक अेवं बौध्दिक अनुभवोंकी समानता अिस अध्ययन के व्दारा प्रस्तुत कर सकूं और अिस अध्ययनव्दारा दोनों साहित्यों का सामीप्य सिध्द हो जाय, यही अिस प्रबंधकर्ता की मनोभिलाषा है.

---

१)'आजका भारतीय साहित्य'- साहित्य अेकादमी. दिल्ली प्रस्तावनासे.